

# माँ रौदुद सारिउँ कौइ बौडिया





# माँ रौ दुद सारितँ कौइ बौड़िया

Bangani  
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language  
Community based Book

प्रकाशण:-  
NLCI  
बंगाणी मसी समिति समू

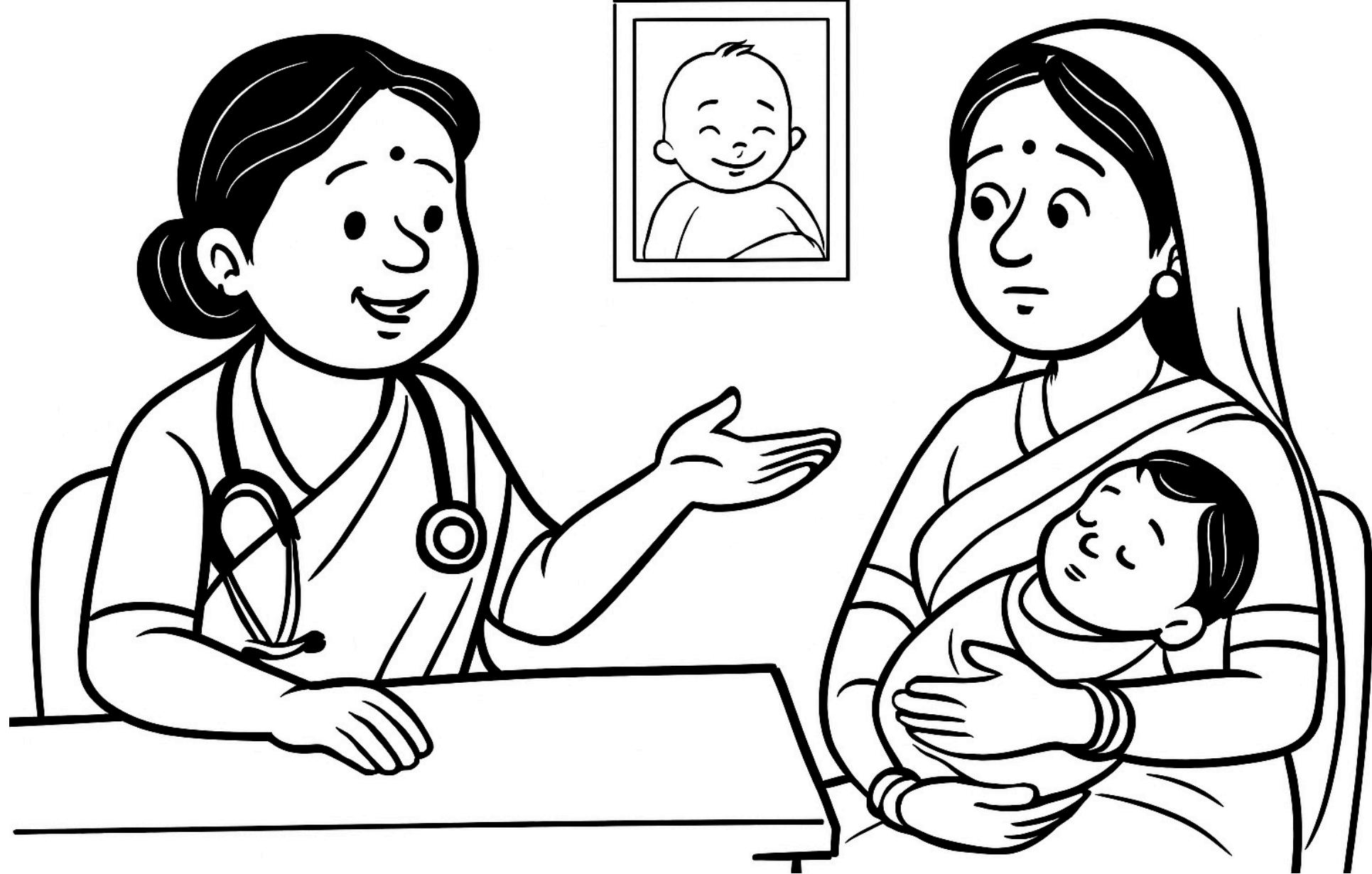
## दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बढ़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकि जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद ॥



एक गाउँ दि सुनिता नौउँ री एक  
छेउड़ रौये थी, सै गौरकेड़ी थी।  
गाउँ री कुछु छेउड़ियै तीं सौमज्जाण  
थै, कि माँ हूद पेटारौउँ खी औमरित  
आयै।



कुछ दूस बासियै सुनिता औळखुइ  
तिरै माउँ उवौ। डॉक्टरेइ बोलौ  
कि माउँ रौ जनम औणै बासियै  
तेत्राइ माउँ खि माँ रौ दूद जौरुरी  
जा देणनै।



तैवे सुनिताइ पैहली बैरे आपड़ौ माउँ  
कौइ दुद पियाओ। सेउ माउँ की  
आपड़ी आमा री ऊँगाळिदि बौरी  
रुक्श थौ।



दादी की सुनिताइ सौमज़ा थी कि  
ओगाणिके रे 6 मीनै जौउं माउं खि  
खाली माँ रौ ई दुद देणनै चाइं औज़ि  
दुद कौइ औलावा कुछु बी ना  
देणनै चाइं ।



सुनिताइ दादी कौइ पुछौ कि का  
माउँ खि पाणी बी देणनै जा ।

दादीएइ गोलौ ना आं, माँ रौ दुद ई  
तेसखि पाणी औजि खाणौ औये ।



सुनिता रोज़ बौत्ते बौत्ते दि आपडौ  
माउँ कौइ दुद पिया थी । औज़ि माउँ  
बी बिलकुल ठीक थौ ।



एक दूसरीं काइ कुछ छेउड़ियै  
आई, सै तियारी बोलदि लागी, कि  
कुछ बौज़ारे रौ दुद औज़ि दौळिया  
बी दैओ एसरिव। पर दादीएड  
बोलौ न आं ईबी खाली माँ रौ दुद  
ई देणनौ।



सुनिता के केत्रा केत्रा काम कौरदु  
बैर आपड़े माउँ री चिन्ता औये थी ।  
तैबे की सै आपड़ौ माउँ कौइ बौत्ते  
दि दुद पिया थी ।



6 मीनै बासियै सुनिता रै माउँ ओरु  
पोरु गिसरु-दै लागी गोओ थौ, सेउ  
आफुइ मुस्कुरायै थौ औजि खेलै  
बी थौ।



तेतबासियै सुनियाइ आराम आराम  
कौइ थोड़ौ औळखौ खाणौ देणनौ  
शुरु कियौ, औज़ि साथी दुद बी है  
थी ।



ਗਾਉਂ ਰੀ ਹੁਜੀ ਛੇਤਡਿਧੈ ਕੀ ਸੁਨਿਤਾ  
ਕੌਇ ਸ਼ਿਕ ਦਿ ਲਾਗੀ ਗੋਏ ਥੈ। ਸੈ  
ਆਪੜੇ ਪੇਟਾਰਾਉਂ ਕੌਇ 6 ਮੀਨੈ ਜਾਉਂ  
ਖਾਲੀ ਹੁਦ ਈ ਪਿਧਾਨਦੇ ਲਾਗੈ।



सुनिताइ बोलौ कि माँ रौ दुद  
पेटारौउँ खि सारिउँ कौइ बौडिया  
आैयै। माउँ बी आैस्दै रौ थौ लागा।  
आैजि जेती तेत्कै थै सै सारै जौणै  
खुश उवै।

## For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.



यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें।

और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्द कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,, धन्यवाद ,,,,,,,

